UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 1 ऋषि कुमार नचिकेता (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

महर्षि वाजश्रवा महान विद्वान और चरित्रवान थे। नचिकेता उनके पुत्र थे। एक बार वाजश्रवा ने विश्वजित यज्ञ किया। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति दान में देने की प्रतिज्ञा की। दान में पिता ने निर्बल और बूढ़ी गाएँ भी दीं जो लाभ की नहीं थीं। नचिकेता ने पिता से लाभकारी और प्रिय वस्तु को दान देने की सलाह देते हुए पूछा कि आप मुझे दान के रूप में किसके हवाले करेंगे। बार-बार पूछने पर पिता ने क्रोध में कहा, "मैं तुझे यमराज के हवाले कर दूंगा।" नचिकेता आज्ञाकारी बालक था। वह पिता के वचन को सत्य करना चाहता था; अतः पिता से बहुत ही मुश्किल से आज्ञा पाने के बाद वह यमलोक पहुँचा। यमदूतों से पता चला कि यमराज कहीं गए हैं। बालक का परिचय पूछा। नचिकेता ने निर्भीकता और विनम्रता से अपना परिचय दिया।

यमराज ने प्रसन्न होकर आज्ञाकारी बालक से तीन वरदान माँगने को कहा। नचिकेता ने पहला वरदान यह माँगा कि मेरे घर लौटने पर पिता मुझे पहचान लें और प्रसन्न हो जाएँ। यमराज ने कहा, "तथास्तु। दूसरा वरदान माँगो।" नचिकेता ने दूसरे वरदान में पृथ्वी पर दुख के निवारण का उपाय पूछा। यमराज ने बहुत परिश्रम से इसका ज्ञान भी बालक को दिया। तीसरे वरदान में नचिकेता ने पूछा कि मृत्यु क्यों होती है? मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है? वह कहाँ जाता है? यह प्रश्न सुनकर यमराज चौंक पड़े। उन्होंने बताया कि यह कठिन प्रश्न है, जिसका उत्तर देना आसान नहीं है। फिर उन्होंने समझाया कि जिसने कोई पाप नहीं किया, और किसी को सताया नहीं और जो सच्चे मार्ग पर चलता है, उसे मृत्यु की पीड़ा नहीं होती। नचिकेता ने छोटी उम्र में अपनी पितृभक्ति, दृढ़ता और सच्चाई के बल पर ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया, जिसे महान पंडित, ज्ञानी और विद्वान भी न कर सके।

https://www.evidyarthi.in/